ई–संस्करण, अंक 8

Room to Read®
World Change Starts with Educated Children.®

गपशप

नमस्कार,
आशा है कि आप और आपका परिवार अच्छे से होंगे। जैसा कि आप जानते हैं हम सभी लॉकडाउन में हैं और अपने–अपने घर पर हैं, हमने सोचा कि अपने नियमित समाचार पत्र गपशप का ई–संस्करण लाया जाए। हम आपको लॉकडाउन की इस अवधि के दौरान समय–समय पर इस तरह के ई–गपशप भेजते रहेंगे। आशा है कि आपको इसे पढ़कर अच्छा लगेगा। आप इसे अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों और आपके अनुसार जिन्हें भी इन लेखों को पढ़ने में मज़ा आए उनके साथ साझा कर सकते हैं।
घर पर रहें। सुरक्षित रहें।

आपकी चुलबुली और बुलबुली

अब मुश्किल नहीं कुछ भी

गपशप के इस बार के संस्करण में हम लेके आए हैं ऐसी दो साहसी महिलाओं के बारे में जिन्होंने हिंसा का सामना करते हुए भी हार नहीं मानी, और कुछ ऐसी उपलब्धि हासिल की जिसके बारे में ज्यादातर लोग सोच भी नहीं पाते।

पाकिस्तान में रहने वाली **मलाला यूसुफजई** जब केवल 11–12 वर्ष की थी तब वे अपने प्रांत में आतंकवादियों द्वारा किये गए अत्याचारों के बारे में लिखती थी। आतंकवादी नहीं चाहते थे कि लड़कियाँ पढ़ाई–लिखाई करें, पर मलाला पढ़ना चाहती थी। अक्टूबर 2012 में जब वे केवल 15 वर्ष की थी, आतंकवादियों ने उन पर गोली चलाई जिससे वे बुरी तरह घायल हो गयी। उन्हें इलाज के लिए इंग्लैण्ड ले जाया गया जहाँ डॉक्टरों के प्रयास से वे बच गयी। इस दुर्घटना ने मलाला को कमजोर नहीं बल्कि और लड़ने की शक्ति दी, और अब वे बिना किसी डर के हर मंच पर बच्चों की शिक्षा की माँग को दोहराती हैं। उसने मलाला फंड नामक एक संस्था भी शुरू की है जो लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में काम करता है। मलाला को देश–विदेश से ढेरों पुरस्कार के साथ, 2014 का नोबेल शान्ति पुरस्कार भी मिला है।

1988 में जन्मी **अरुणिमा सिन्हा** एक राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी थी। 2011 में जब वे ट्रेन से सफर कर रही थी, तब कुछ अपराधियों ने उनका सामान छीनने की कोशिश की। चुपचाप अपना सामान देकर हार मानने के बजाए अरुणिमा ने अपराधियों से लड़ना बेहतर समझा। पर उस संघर्ष के दौरान उन लोगों ने अरुणिमा को चलती ट्रेन से बाहर फेंक दिया। इस दुर्घटना में वह अपना एक पैर गंवा बैठीं क्योंकि उनकी जान बचाने के लिए डॉक्टरों को उनका एक पैर काटना पड़ा। पर इतने बड़े हादसे के बाद भी साहस और दृढ़ता का परिचय देते हुए अरुणिमा ने 2013 में माउंट एवरेस्ट के शिखर को फतह कर एक नया इतिहास रचा। वे एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला ऐम्प्युटी बनीं। (ऐम्प्युटी उन लोगों को कहा जाता है जिनका हाथ या पैर किसी दुर्घटना या बिमारी की वजह से काटना पड़ा हो)। उन्होंने विकलांग और आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए एक खेल अकादमी भी शुरू की है। 2015 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया।

आओ हल करें

एक आदमी अपने गाँव से तीन बोरी केले लेकर शहर की ओर चला। उसकी हर बोरी में 30 केले हैं। शहर के रास्ते में उसे 30 नाकों (चेक पोस्टों) से हो कर गुजरना है, और हर नाके पर प्रति बोरी एक केला कर (टैक्स) देना है, चाहे वह अलग–अलग बोरी से दे या एक ही बोरी से। तो शहर पहुँचने पर उसके पास कितने केले बचे रहेंगे (वह आदमी ज्यादा से ज्यादा केले बचाने की कोशिश करेगा)।

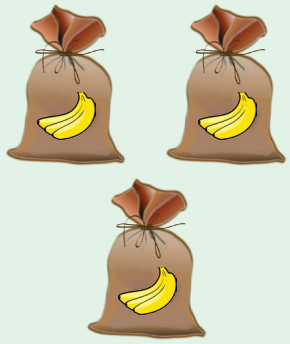

25 केले

बूझो तो जानें

हम गपशप के द्वारा आप सब को लगातार ऐसी महिलाओं के बारे में बताते रहते हैं जिन्होंने किसी न किसी क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है। अब चलिए पता लगाते हैं कि ऐसी कितनी महिलाओं की कहानी आपको याद है। नीचे हमने कुछ प्रसिद्ध महिलाओं को पहचानने के लिए संकेत दिए हैं। आप सब को यह कोशिश करना है कि आप कम से कम संकेतों की मदद से इन महिलाओं को पहचानें।

1. यह मणिपुर की रहने वाली हैं,
   यह एक प्रसिद्ध बॉक्सिंग खिलाड़ी हैं,
   2014 में इनके जीवन पर एक प्रसिद्ध हिंदी सिनेमा बनी थी।
2. यह जन्म से भारतीय नहीं थीं, पर अपना ज्यादातर समय भारत में ही गुजारा,
   इन्होंने कोलकाता स्थित मिशनरीज ऑफ चैरिटी नामक संस्था की स्थापना की,
   इनको 1979 में नोबेल शान्ति पुरस्कार मिला था।
3. यह एक प्रसिद्ध बैडमिंटन खिलाड़ी हैं,
   इन्होंने 2012 के लंदन ओलम्पिक खेलों में पदक जीता था,
   यह ओलम्पिक खेलों में बैडमिंटन में पदक जीतने वाली पहली भारतीय हैं।
4. यह भारत की पहली महिला गवर्नर थीं,
   यह एक जानी–मानी कवि भी थीं,
   इन्हें "भारत कोकिला" नाम से भी जाना जाता है।

1. मेरी कॉम 2. सरोजिनी नायडू 3. साइना नेहवाल 4. सरोजिनी नायडू